Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हिंद महासागर में बढ़ती महाशक्ति प्रतिस्पर्धा और भारत की समुद्री सुरक्षा रणनीति-भू-राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सामरिक परिप्रेक्ष्य

प्रा. राहुल दिलीप पाटील
झेड. बी. पाटील महाविद्यालय, धुले, (महाराष्ट्र - भारत)

सारांश:
इक्कीसवीं शताब्दी में हिंद महासागर वैश्विक राजनीति, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा और सामरिक प्रतिस्पर्धा का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा है। चीन की बढ़ती समुद्री उपस्थिति, संयुक्त राज्य अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति तथा क्षेत्रीय शक्तियों के बदलते सामरिक हितों ने इस महासागर के भू-राजनीतिक महत्त्व को नया आयाम प्रदान किया है। भारत के लिए हिंद महासागर केवल भौगोलिक निकटता का क्षेत्र नहीं, बल्कि उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय संबंधों का महत्त्वपूर्ण आधार है। प्रस्तुत शोध-आलेख का उद्देश्य हिंद महासागर में बढ़ती महाशक्ति प्रतिस्पर्धा के स्वरूप, प्रमुख कारणों और उसके भारत की समुद्री सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धतियों का उपयोग किया गया है। भारतीय नौसेना के रणनीतिक दस्तावेजों, सरकारी प्रतिवेदनों, अंतरराष्ट्रीय संस्थागत प्रकाशनों तथा सामरिक अध्ययनों को विवेचन का आधार बनाया गया है।
अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, समुद्री प्रतिस्पर्धा केवल सैन्य उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि बंदरगाहों, ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री व्यापार, निगरानी प्रणालियों और क्षेत्रीय साझेदारियों से भी संबंधित है। भारत की सागर तथा महासागर संबंधी पहलों में राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा और क्षेत्रीय सहयोग के बीच समन्वय का प्रयास दिखाई देता है। शोध का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि भारत की समुद्री सुरक्षा का विश्लेषण सैन्य क्षमता के साथ आर्थिक प्रत्यास्थता, समुद्री क्षेत्र जागरूकता, अंतरराष्ट्रीय विधि और पड़ोसी देशों की संप्रभुता को ध्यान में रखकर करना आवश्यक है।

बीज शब्द: हिंद महासागर, महाशक्ति प्रतिस्पर्धा, भारत, समुद्री सुरक्षा, हिंद-प्रशांत, चीन, समुद्री कूटनीति, सागर, सामरिक स्वायत्तता, समुद्री क्षेत्र जागरूकता।

प्रस्तावना: हिंद महासागर प्राचीन काल से एशिया, अफ्रीका तथा यूरोप के मध्य व्यापारिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संपर्क का महत्त्वपूर्ण माध्यम रहा है। औपनिवेशिक काल में समुद्री व्यापारिक मार्गों और बंदरगाहों पर नियंत्रण साम्राज्यवादी शक्तियों की प्रमुख रणनीतिक आवश्यकता थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उपनिवेशवाद के अंत, शीतयुद्ध की महाशक्ति प्रतिस्पर्धा और एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के विकास ने इस क्षेत्र की राजनीतिक संरचना को प्रभावित किया। वर्तमान समय में हिंद महासागर का महत्त्व वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और ऊर्जा परिवहन की सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास संस्था के अनुसार "विश्व के अंतरराष्ट्रीय वस्तु व्यापार का 80 प्रतिशत से अधिक भाग समुद्री मार्गों से संचालित

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

होता है।"[1] विशेषतः होर्मुज, बाब-अल-मंदेब तथा मलक्का जलडमरूमध्य अंतरराष्ट्रीय व्यापार और सामरिक गतिविधियों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

चीन की विस्तारित नौसैनिक गतिविधियाँ, अमेरिकी समुद्री उपस्थिति तथा भारत, फ्रांस और अन्य क्षेत्रीय शक्तियों की सुरक्षा संबंधी प्राथमिकताएँ हिंद महासागर की बदलती भू-राजनीति को प्रभावित कर रही हैं। भारत की भौगोलिक स्थिति उसे इस प्रतिस्पर्धा का प्रत्यक्ष हितधारक बनाती है। इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन हिंद महासागर में महाशक्ति प्रतिस्पर्धा की संरचना, भारत की समुद्री सुरक्षा संबंधी प्राथमिकताओं तथा क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाओं का परीक्षण करता है। अध्ययन में विशेष रूप से 2015 से सितंबर 2026 तक की रणनीतिक पहलों और उपलब्ध संस्थागत साक्ष्यों को सम्मिलित किया गया है।

1. हिंद महासागर का भू-राजनीतिक एवं सामरिक महत्त्व: हिंद महासागर की भौगोलिक संरचना इसे अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संतुलन का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बनाती है। पश्चिम में अफ्रीका, उत्तर में एशिया और पूर्व में ऑस्ट्रेलिया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया से घिरा यह महासागर विश्व के प्रमुख औद्योगिक एवं ऊर्जा उत्पादक क्षेत्रों को जोड़ता है। भारत की प्रायद्वीपीय स्थिति और अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह की अवस्थिति उसे समुद्री परिवहन की सुरक्षा से सीधे जोड़ती है। भारतीय नौसेना की "2015 की समुद्री सुरक्षा रणनीति, Ensuring Secure Seas, राष्ट्रीय समुद्री हितों, परिचालन क्षेत्रों और समुद्री खतरों को समग्र रणनीतिक ढाँचे में प्रस्तुत करती है।"[2]

आर्थिक गतिविधियों के वैश्वीकरण ने समुद्री मार्गों की सुरक्षा को राष्ट्रीय सीमाओं से परे व्यापक अंतरराष्ट्रीय प्रश्न बना दिया है। "संयुक्त राष्ट्र समुद्री विधि अभिसमय, 1982 का अनुच्छेद 87 खुले समुद्र में नौवहन की स्वतंत्रता सहित विभिन्न अधिकारों को मान्यता देता है।"[3] इस कानूनी व्यवस्था के अंतर्गत नौवहन की स्वतंत्रता और तटीय देशों के वैध समुद्री अधिकारों के मध्य संतुलन आवश्यक है।

2. समुद्री व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा और रणनीतिक जलमार्ग: हिंद महासागर की सामरिक संवेदनशीलता का प्रमुख कारण वैश्विक व्यापार और ऊर्जा परिवहन की समुद्री मार्गों पर निर्भरता है। होर्मुज जलडमरूमध्य पश्चिम एशिया के ऊर्जा निर्यात, बाब-अल-मंदेब लाल सागर तथा स्वेज मार्ग और मलक्का जलडमरूमध्य हिंद महासागर तथा प्रशांत महासागर के मध्य परिवहन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास संस्था की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, "जून 2024 में अदन की खाड़ी पहुँचने वाले जहाजों की कुल वहन क्षमता दिसंबर 2023 के मध्य के तुलनात्मक स्तर से 76 प्रतिशत कम थी। इसी अवधि में स्वेज नहर से गुजरने वाले जहाजों की संख्या लगभग 70 प्रतिशत कम हुई।"[4] इन परिवर्तनों से स्पष्ट होता है कि क्षेत्रीय संघर्षों का प्रभाव समुद्री मालभाड़े, ऊर्जा मूल्यों, परिवहन समय और आपूर्ति शृंखलाओं पर पड़ता है। भारत के संदर्भ में समुद्री सुरक्षा का आर्थिक पक्ष भी महत्त्वपूर्ण है। वैकल्पिक व्यापारिक मार्गों, बंदरगाहों की दक्षता तथा ऊर्जा आयात के विविधीकरण का अध्ययन इसलिए आवश्यक है।

3. चीन की बढ़ती समुद्री उपस्थिति और सामरिक प्रतिस्पर्धा: चीन की समुद्री रणनीति में ऊर्जा परिवहन, व्यापारिक संपर्क, विदेशों में आर्थिक निवेश और दूरवर्ती नौसैनिक परिचालन का महत्त्व बढ़ा

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

है। हिंद महासागर के अनेक तटीय देशों में चीनी अवसंरचना निवेश ने वाणिज्यिक संपर्क के साथ संभावित सामरिक उपयोग के प्रश्न भी उत्पन्न किए हैं। तथापि प्रत्येक चीनी वित्तपोषित बंदरगाह को सैन्य अड्डा मानना साक्ष्यों के अनुरूप नहीं होगा। जिबूती में चीन का सैन्य सहायता अड्डा उसकी विदेशों में नौसैनिक उपस्थिति का प्रत्यक्ष उदाहरण है। "17 सितंबर 2026 को प्रकाशित सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज के उपग्रह-आधारित अध्ययन में अड्डे की संचार और संभावित खुफिया क्षमताओं के विस्तार की पहचान की गई है।"[5]

अमेरिकी रक्षा विभाग की 2025 की रिपोर्ट भी "चीन की विदेशों में सैन्य सहायता और रसद संबंधी अवसंरचना विकसित करने की गतिविधियों का उल्लेख करती है। हालाँकि ऐसी अमेरिकी रिपोर्टों के रणनीतिक आकलनों को स्वतंत्र रूप से स्थापित तथ्यों से अलग समझना आवश्यक है।"[6] भारत के लिए इस परिस्थिति के प्रमुख निहितार्थ समुद्री गतिविधियों की पारदर्शिता, संभावित संकट की स्थिति में व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा और क्षेत्रीय देशों के साथ विश्वासपूर्ण संबंध बनाए रखने से संबंधित हैं।

4. संयुक्त राज्य अमेरिका तथा अन्य शक्तियों के समुद्री हित: संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए हिंद महासागर पश्चिम एशिया, पूर्वी अफ्रीका तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र को जोड़ने वाला महत्त्वपूर्ण सामरिक क्षेत्र है। उसकी समुद्री उपस्थिति का संबंध व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा, सैन्य आवागमन, साझेदार देशों के साथ सहयोग और क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्थाओं से है। अमेरिका तथा चीन की समुद्री प्राथमिकताओं में महत्त्वपूर्ण अंतर है। अमेरिका की क्षेत्रीय गतिविधियाँ उसके मौजूदा सैन्य संबंधों और व्यापक हिंद-प्रशांत प्रतिबद्धताओं से जुड़ी हैं, जबकि चीन अपनी व्यापारिक निर्भरता के साथ दूरवर्ती सैन्य सहायता और परिचालन क्षमता विकसित कर रहा है।

फ्रांस सहित अन्य शक्तियों के भी हिंद महासागर में प्रत्यक्ष क्षेत्रीय और समुद्री हित हैं। भारत के लिए इन शक्तियों के साथ सहयोग का मूल्यांकन विशिष्ट गतिविधियों के आधार पर किया जाना चाहिए। समुद्री अभ्यास, सूचना-साझाकरण, आपदा सहायता और तकनीकी सहयोग के क्षेत्र में हितों का अभिसरण संभव है, जबकि सैन्य गठबंधनों तथा रणनीतिक प्राथमिकताओं के संबंध में मतभेद बने रह सकते हैं।

5. भारत की सागर और महासागर संबंधी रणनीतिक पहल: भारत की समुद्री रणनीति में पारंपरिक राष्ट्रीय रक्षा के साथ क्षेत्रीय सहयोग और साझेदार देशों की क्षमता विकसित करने का महत्त्व बढ़ा है। वर्ष 2015 में घोषित सागर दृष्टिकोण तथा 12 मार्च 2025 को मॉरीशस में प्रस्तुत महासागर दृष्टिकोण इस परिवर्तन को दर्शाते हैं। "महासागर अर्थात क्षेत्रों में सुरक्षा और विकास के लिए पारस्परिक एवं समग्र उन्नति की अवधारणा में विकासोन्मुख व्यापार, टिकाऊ विकास के लिए क्षमता निर्माण और साझा सुरक्षा पर बल दिया गया है।"[7]

भारत की इस नीति का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष हिंद महासागर के छोटे द्वीपीय देशों और तटीय साझेदारों के साथ सहयोग है। समुद्री सुरक्षा के साथ जलविज्ञान, समुद्री संसाधन, तकनीकी सहायता और क्षमता निर्माण जैसे विषय भी इस सहयोग के अंतर्गत आते हैं। इस दृष्टिकोण की व्यावहारिक परीक्षा साझेदार देशों की वास्तविक आवश्यकताओं, परियोजनाओं की दीर्घकालिक उपयोगिता और उनकी संप्रभुता के सम्मान के आधार पर की जा सकती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

6. समुद्री क्षेत्र जागरूकता और भारतीय नौसेना की भूमिका: समुद्री क्षेत्र जागरूकता का आशय समुद्र में संचालित गतिविधियों की जानकारी एकत्र करना, उनका विश्लेषण करना तथा संभावित सुरक्षा जोखिमों की पहचान करना है। भारत ने इस क्षेत्र में सूचना-साझाकरण को संस्थागत स्वरूप दिया है। 22 दिसंबर 2018 को गुरुग्राम में स्थापित सूचना संलयन केंद्र–हिंद महासागर क्षेत्र इस व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण अंग है। केंद्र के आधिकारिक विवरण के अनुसार, "इसके 28 देशों में 76 संपर्क स्थापित हुए हैं। केंद्र समुद्री डकैती, अवैध मत्स्यन, तस्करी तथा अन्य समुद्री घटनाओं से संबंधित सूचना साझा करता है।"[8]

भारतीय नौसेना के वास्तविक अभियानों में भी निगरानी और सूचना-साझाकरण की उपयोगिता दिखाई देती है। "मार्च 2024 में समुद्री डकैती से प्रभावित व्यापारिक जहाज एमवी रुएन के अभियान में 17 चालक दल के सदस्यों की सुरक्षित रिहाई हुई।"[9] जुलाई 2026 में अदन की खाड़ी में एमवी गोल्डन आर्सेनल की सहायता संबंधी अभियान ने सूचना-साझाकरण, "समुद्री निगरानी और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक जहाजों की सुरक्षा में समन्वय की निरंतर आवश्यकता को रेखांकित किया।[10]

7. क्षेत्रीय सहयोग, सामरिक स्वायत्तता और समुद्री कूटनीति: भारत की समुद्री कूटनीति में द्विपक्षीय संबंधों के अतिरिक्त बहुपक्षीय सहयोग का भी महत्त्व है। वर्ष 2019 में घोषित "हिंद-प्रशांत महासागर पहल के सात प्रमुख स्तंभों में समुद्री सुरक्षा, समुद्री पारिस्थितिकी, संसाधन, क्षमता निर्माण, आपदा प्रबंधन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा व्यापारिक संपर्क शामिल हैं।"[11] मार्च 2025 में "भारत और मॉरीशस के संयुक्त दृष्टिकोण में समुद्री सुरक्षा, समुद्री अर्थव्यवस्था तथा व्यापक रणनीतिक साझेदारी पर विशेष ध्यान दिया गया।"[12]

सामरिक स्वायत्तता के संदर्भ में भारत के समक्ष सहयोग और स्वतंत्र नीतिगत निर्णय के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रश्न उपस्थित होता है। विभिन्न शक्तियों के साथ साझेदारी का विस्तार अनिवार्यतः किसी एक शक्ति के साथ स्थायी सैन्य संरेखण नहीं है। हिंद महासागर के छोटे देशों की अपनी राजनीतिक और आर्थिक प्राथमिकताएँ भी हैं। अतः क्षेत्रीय सहयोग का अध्ययन केवल महाशक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा के आधार पर नहीं, बल्कि संबंधित तटीय देशों की विकासात्मक आवश्यकताओं को सम्मिलित करके करना आवश्यक है।

8. समुद्री सुरक्षा की उभरती चुनौतियाँ और भारत की रणनीतिक क्षमताएँ: पारंपरिक सैन्य प्रतिस्पर्धा के अतिरिक्त समुद्री डकैती, अवैध मत्स्यन, तस्करी, जलवायु परिवर्तन, समुद्री प्रदूषण और आपूर्ति श्रृंखलाओं की अस्थिरता व्यापक समुद्री सुरक्षा को प्रभावित करती हैं। भारत में स्वदेशी जहाज निर्माण भी इस व्यापक सुरक्षा व्यवस्था का एक घटक है। "मार्च 2026 में अगली पीढ़ी के अपतटीय गश्ती पोत शची के जलावतरण संबंधी सरकारी सूचना में निगरानी, खोज एवं बचाव, अपतटीय परिसंपत्तियों की सुरक्षा और आपदा सहायता जैसे परिचालन उद्देश्यों का उल्लेख किया गया है।"[13]

समकालीन सुरक्षा परिस्थितियों की निरंतर निगरानी भी आवश्यक है। भारतीय नौसेना के सूचना संलयन केंद्र द्वारा "सितंबर 2026 तक जारी साप्ताहिक समुद्री सुरक्षा प्रतिवेदन समुद्री जोखिमों और घटनाओं

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

के अध्ययन के लिए उपलब्ध संस्थागत आधार प्रदान करते हैं।"[14] इन परिस्थितियों में सैन्य आधुनिकीकरण के साथ बंदरगाह सुरक्षा, साइबर प्रत्यास्थता, व्यापारिक संपर्क, पर्यावरणीय संरक्षण और नागरिक संस्थाओं के साथ समन्वय भारत की समुद्री सुरक्षा के परस्पर संबंधित आयाम हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिंद महासागर में बढ़ती महाशक्ति प्रतिस्पर्धा का संबंध केवल नौसैनिक शक्ति के विस्तार से नहीं, बल्कि समुद्री व्यापार, ऊर्जा परिवहन, बंदरगाह अवसंरचना, अंतरराष्ट्रीय कानून और क्षेत्रीय राजनीतिक संबंधों से भी है। चीन की विस्तारित समुद्री गतिविधियाँ तथा अमेरिका और अन्य शक्तियों की क्षेत्रीय उपस्थिति हिंद महासागर के सामरिक परिवेश को निरंतर प्रभावित कर रही हैं। भारत की समुद्री सुरक्षा रणनीति में तीन परस्पर संबंधित आयाम दिखाई देते हैं राष्ट्रीय समुद्री हितों की रक्षा, क्षेत्रीय देशों के साथ सुरक्षा सहयोग तथा बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में सामरिक स्वायत्तता बनाए रखना। सागर और महासागर संबंधी नीतिगत पहलों के अतिरिक्त सूचना संलयन केंद्र की स्थापना तथा भारतीय नौसेना की समुद्री सुरक्षा गतिविधियाँ इन आयामों की संस्थागत और परिचालन अभिव्यक्तियाँ हैं।

अध्ययन का महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि समुद्री सुरक्षा को केवल युद्धपोतों अथवा सैन्य उपस्थिति के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है। आर्थिक प्रत्यास्थता, समुद्री सूचना-साझाकरण, तटीय देशों की संप्रभुता, पर्यावरणीय सुरक्षा तथा बहुपक्षीय संस्थाओं की भूमिका भी इसके आवश्यक घटक हैं। इस अध्ययन की प्रमुख सीमा सार्वजनिक रूप से उपलब्ध दस्तावेजों और संस्थागत प्रतिवेदनों पर निर्भरता है। इसलिए गोपनीय सैन्य क्षमताओं अथवा विभिन्न देशों की अप्रकाशित रणनीतिक योजनाओं का स्वतंत्र परीक्षण संभव नहीं है। उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर भारत की समुद्री रणनीति को राष्ट्रीय सुरक्षा और समावेशी क्षेत्रीय सहयोग के मध्य निरंतर विकसित होते संबंध के रूप में समझा जा सकता है।

संदर्भ-सूची:

1. पाण्डेय अमर कुमार एवं पाण्डेय, स्मिता, 'हिन्द महासागर क्षेत्र में बढ़ते सैन्य उपकरण से भारत के समक्ष उभरती सुरक्षा चुनौतियाँ', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च इन आर्ट्स, साइंस एंड टेक्नोलॉजी, खंड 2, अंक 8, अगस्त 2024, पृ. क्र. 12.
2. झा बी. के. एवं सिंह, आर. के., 'हिंद महासागर का बदलता सामरिक परिदृश्य : तटीय देशों के विशेष संदर्भ में', रिसर्च हब इंटरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल, खंड 11, अंक 1, जनवरी 2024, पृ. क्र. 10.
3. भारतीय वैश्विक परिषद, उभरता भारत : अमृत काल में विदेश नीति आईसीडब्ल्यूए में युवाओं के विचार, सप्रू हाउस, नई दिल्ली, अगस्त 2025, पृ. क्र. 21.
4. राठौर विधि, 'भारत-प्रशांत क्षेत्र में द्वीपीय राष्ट्रों के लिए अधिमान्य सुरक्षा प्रदाता के तौर पर भारत', भारतीय वैश्विक परिषद, उभरता भारत : अमृत काल में विदेश नीति, नई दिल्ली, 2025, पृ. क्र. 39.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

5. पाटिल उदय नितिन, 'नेट सुरक्षा प्रदाता के तौर पर भारत : रणनीतिक अभिसरण तथा भारत-प्रशांत क्षेत्र में भारत-अमेरिका सुरक्षा सहयोग का भविष्य', भारतीय वैश्विक परिषद, उभरता भारत : अमृत काल में विदेश नीति, नई दिल्ली, 2025, पृ. क्र. 55.
6. कुमार के. नवनीत, 'क्षेत्रीय सुरक्षा में एक कर्ता के तौर पर भारत का विकास : संयत से प्रमुख सुरक्षा प्रदाता तक', भारतीय वैश्विक परिषद, उभरता भारत : अमृत काल में विदेश नीति, नई दिल्ली, 2025, पृ. क्र. 21.
7. 'हिन्द महासागर में चीन का बढ़ता हुआ कद भारत की सुरक्षा के लिए चुनौती : चीन का हिन्द महासागर में बढ़ता प्रभुत्व और भारतीय सुरक्षा', जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्चेज इन एलाइड एजुकेशन, खंड 16, अंक 4, मार्च 2019, पृ. क्र. 698.
8. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, वार्षिक रिपोर्ट 2024, नई दिल्ली, 2025, अध्याय 2, 'हिंद महासागर क्षेत्र', पृ. क्र. 55.
9. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, वार्षिक रिपोर्ट 2024, नई दिल्ली, 2025, भारत-प्रशांत क्षेत्र तथा क्षेत्रीय सहयोग संबंधी अनुभाग, पृ. क्र. 201.
10. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, वार्षिक रिपोर्ट 2023, नई दिल्ली, 2024.
11. विदेश मामलों से संबंधित संसदीय स्थायी समिति, भारत की हिंद महासागर रणनीति का मूल्यांकन, रिपोर्ट, 11 अगस्त 2025; हिंदी सारांश, पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च.
12. पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार, 'समुद्री क्षेत्र की रणनीति और विकास', पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली, 21 जुलाई 2026.
13. दृष्टि आईएएस, 'भारत की समुद्री रणनीति', हिंदी शोध एवं समसामयिक विश्लेषण, 14 जनवरी 2026.
14. ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, 'भारत-चीन प्रतिस्पर्धा : पड़ोसी देशों का दृष्टिकोण और उन पर पड़ता प्रभाव', हिंदी विश्लेषणात्मक आलेख, 2022.